श्री साई व्रत कथा

भूमिका

शिरडी गांव में नीम के वृक्ष तले बालक रूप में साई बाबा का प्राकट्य हुआ–धरती उनकी माता व आकाश उनके पिता थे। संतों की कोई जाति नहीं होती। दया, शांति ही संतों का धर्म है। दीन दयालु, प्यार के सागर बनकर साई बाबा भक्तों के लिये इस संसार में प्रकट हुए। 'सबका मालिक एक है', यही साई बाबा का मंत्र है। जो श्रद्धा और धीरज रखता है उसकी साई बाबा जरूर मदद करते हैं, **कल** को भूल जाओ और आज में जीना चाहिये। यही साई बाबा ने सिखाया है। अपनी अंतर आत्मा की आवाज सुनकर ईश्वर में ध्यान लगाकर साधनापथ को अपनाना चाहिए। साई की भक्ति की धूनी मन में रमानी चाहिये। ईश्वर को बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं वो तो अपने मन में ही बसा हुआ है।

जो व्यक्ति साई भक्ति मन से करता है उसके सर्व विघ्न दूर होते हैं, सर्व दुःख दूर हो जाते हैं। सब सुखों की प्राप्ति होती है। जो साई पर अटूट श्रद्धा रखता है उसकी इच्छा साई पूरी करते हैं। साई बाबा ने कहा है कि मैं सत्य हूं, ये बात सच्ची मानोगे तो उसका अनुभव अपने आप होगा। जो मेरी शरण में आएगा उसके मैं सभी कार्य करूंगा। जो मुझे जिस स्वरूप में मानेगा। उस रूप में मैं उसे दर्शन दूंगा। जो व्यक्ति सत्य सहाय लेने मेरे पास आयेगा मैं उसकी सहायता करूंगा। जो मुझे तन, मन और वचन से याद करता है उसका ऋण मुझ पर चढ़ता है। जो नित्य साई बाबा को भजता है उसे भेद-अभेद नहीं रहता।

जब जब धर्म की हानि और अधर्म का प्रसार हुआ तब तब प्रभु ने कितने ही रुपों में इस मृत्युलोक में जन्म लिया और धरती पर पुनः धर्म की स्थापना की, प्रजा को नया रास्ता दिखाया। इन अवतारों में शिरडी के साई बाबा का नाम भी प्रमुख है। शिरडी के साई बाबा नाम से कौन परिचित नहीं? साई बाबा की भक्ति में शक्ति छुपी है। इसी कारण करोड़ों लोग उन्हें ईश्वर का अवतार कहते हैं। जब कोई साई बाबा को हिन्दु कहता तब वे कुरान शरीफ की आयतें सुनाते और जब उन्हें मुसलमान कहा जाता तो वे शिवस्तोत्र संस्कृत में सुनाकर सभी को सोच में डाल देते। साई बाबा ने हिन्दू मुसलमान को एक सूत्र में बांधा था।

साई बाबा किसी को शिवरूप में तो किसी को राम तो किसी को कृष्ण के रूप में दिखते और साई स्वरुप में तो हजारों भक्तों ने अनेक चमत्कार देखे हैं। कौन कहता है कि साई बाबा इस दुनिया में नहीं हैं। ऐसा तो कोई अज्ञानी ही सोच सकता है। साई भक्त के अनुसार साई अमर ज्ञान के रूप में भक्तों के साथ हैं। जो कोई भी व्यक्ति सच्चे दिल से उन्हें याद करता है, वे उसके पास आकर खड़े हो जाते हैं।

साई बाबा ने अपने जीवन काल में कितने ही चमत्कार किये, और आज भी यदि साई बाबा की भक्ति सच्चे हृदय से विश्वासपूर्वक की जाए तो उसके परचे मिले बिना नहीं रहते। साईबाबा इच्छित फल देते हैं। ये भक्तों के अनुभव हैं।

साई बाबा साक्षात देव हैं। साई बाबा पर श्रद्धा रख कर 9 गुरुवार का विधिपूर्वक व्रत किया जाए तो निश्चित ही इच्छित फल की प्राप्ति होती है। साई बाबा का व्रत कैसे किया जाए इसके लिए साई व्रत के नियम निम्नानुसार है।

श्री साई व्रत के नियम

- यह व्रत स्त्री-पुरुष और बच्चे कर सकते हैं।
- यह व्रत कोई भी व्यक्ति जाति-पाति के भेद भाव बिना कर सकता है।
- यह व्रत बहुत ही चमत्कारिक है। नौ गुरुवार विधिपूर्वक

The giver gives, but really he is sowing the seed for later: the gift of a rich harvest.

करने से निश्चित ही इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

- यह व्रत किसी भी गुरुवार से साईं बाबा का नाम ले कर शुरू किया जा सकता है। जिस कार्य के लिए व्रत किया गया हो उसके लिए साईं बाबा से सच्चे हृदय से प्रार्थना करनी चाहिए।
- सुबह या शाम को किसी भी आसन पर पीला कपड़ा बिछा कर उस पर साईं बाबा का चित्र रख कर स्वच्छ पानी से पोंछ कर चंदन या कुंकुम का तिलक लगाना चाहिये और उन पर पीला पुष्प या हार चढ़ाना चाहिए। अगरबत्ती और दीपक जलाकर साईं व्रत की कथा पढ़नी चाहिए और साईं बाबा का स्मरण करना चाहिए तथा प्रसाद बांटना चाहिए (प्रसाद में कोई भी फलाहार या मिठाई बांटी जा सकती है)।
- यह व्रत फलाहार लेकर किया जा सकता है अथवा एक समय भोजन करके किया जा सकता है। बिल्कुल भूखे रहकर उपवास न करें।
- नौ गुरुवार को हो सके तो साईं बाबा के मंदिर जाकर दर्शन करें। साईंबाबा के मंदिर न जा पाएं तो (नजदीक मंदिर न हो तो) घर पर ही श्रद्धापूर्वक साईं बाबा की पूजा की जा सकती है।
- गांव से बाहर जाना हो तो भी उस व्रत को चालू रखा जा सकता है।
- व्रत के समय स्त्रियों को मासिक की समस्या आए अथवा किसी कारण से व्रत न हो पाये तो उस गुरुवार को नौ गुरुवार की गिनती में न गिनें और उस गुरुवार के बदले अन्य गुरुवार करके नौवें गुरुवार को उद्यापन करें।

उद्यापन की विधि

- नौवें गुरुवार को उद्यापन करना चाहिए। इसमें पांच गरीबों को भोजन कराएं (भोजन अपनी यथाशक्ति से देना या करवाना चाहिए।)
- साईं बाबा की महिमा एवं व्रत का प्रचार करने के लिए अपने सगे-संबंधी या पड़ोसियों को यह किताब 5, 11, 21 अथवा यथाशक्ति भेंट दी जाए। इस तरह व्रत का उद्यापन किया जाए।
- नौवें गुरुवार को जो किताबें भेंट देनी हैं, उन्हें पूजा में रखें और बाद में ही भेंट करें जिससे अन्य व्यक्तियों की भी मनोकामना पूर्ण हो।

उपरोक्त विधि से व्रत एवं उद्यापन करने से निश्चित ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। ऐसा साईं भक्तों का विश्वास है।

साईंव्रत कथा

किरण बहन और उनके पति किशनभाई एक शहर में रहते थे। वैसे तो दोनों का एक-दूसरे के प्रति गहरा प्रेम-भाव था। परन्तु किशनभाई का स्वभाव झगड़ालू था। अड़ोसी-पड़ोसी भी उनके स्वभाव से परेशान थे, लेकिन किरण बहन धार्मिक स्वभाव की थीं, भगवान पर विश्वास रखतीं एवं बिना कुछ कहे सब कुछ सह लेतीं। धीरे-धीरे उनके पति का रोजगार ठप्प हो गया। कुछ भी कमाई न होती थी।

अब किशनभाई दिन-भर घर पर ही रहते घर में पड़े-पड़े उनका स्वभाव और भी अधिक चिड़चिड़ा हो गया। एक दिन दोपहर को एक वृद्ध दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। चेहरे पर गजब का तेज था। आकर वृद्ध ने दाल-चावल की मांग की।

किरण बहन ने दाल-चावल दिये और दोनों हाथों से उस वृद्ध बाबा को नमस्कार किया। वृद्ध ने कहा 'साईं सुखी रखे।' किरण बहन ने कहा कि महाराज सुख किस्मत में ही नहीं है फिर मिलेगा कैसे ? ऐसा कहकर उन्होंने अपने दुःखी जीवन का वर्णन किया।

वृद्ध ने श्री साईं बाबा के व्रत के बारे में बताते हुए नौ गुरुवार (फलाहार) या एक समय भोजन करना। हो सके तो बेटा साईं मंदिर जाना। घर पर साईं बाबा की नौ गुरुवार पूजा करना, साईं व्रत करना और विधिपूर्वक उद्यापन करना। भूखे को भोजन देना, साईं व्रत की किताबें 5,11, 21 यथाशक्ति लोगों को भेंट में देना। इस तरह साईं व्रत का प्रचार करना। साईं बाबा तेरी सभी मनोकामना पूर्ण करेंगे। यह व्रत कलियुग में बड़ा चमत्कारिक है। यह सभी की मनोकामना पूर्ण करता है लेकिन साईं बाबा पर अटूट श्रद्धा रखनी जरूरी है। धीरज रखना चाहिए। जो इस विधि से व्रत और उद्यापन करेगा साईं बाबा उसकी मनोकामना जरूर पूर्ण करेंगे।

किरण बहन ने भी गुरुवार का व्रत किया नौवें गुरुवार को गरीबों को भोजन कराया। साईं व्रत की पुस्तकें भेंट में दीं। उनके घर के झगड़े दूर हुए और सुख-शांति हो गई, जैसे किशनभाई का स्वभाव ही बदल गया हो। उनका रोजगार फिर से चालू हो गया। थोड़े समय में ही सुख-समृद्धि बढ़ गई।

अब दोनों पति-पत्नी सुखी जीवन बिताने लगे। एक दिन किरण बहन के जेठ-जेठानी आए। बातों ही बातों में उन्होंने बताया के उनके बच्चे पढ़ाई नहीं करते। परीक्षा में फेल हो गये हैं। किरण बहन ने नौ गुरुवार की महिमा बताई। साईं बाबा की भक्ति से बच्चे अच्छी तरह अभ्यास कर पाएंगे। लेकिन इसके लिए साईं बाबा पर विश्वास रखना जरूरी है। साईं सबकी सहायता करते हैं। उनकी जेठानी ने व्रत की विधि पूछी तब किरण बहन ने कहा कि नौ गुरुवार फलाहार करके अथवा एक समय भोजन करके यह व्रत किया जा सकता है और नौ गुरुवार तक हो सके तो साईं दर्शन के लिए साईं मंदिर जाने को कहा। और यह कहा कि-

- यह व्रत स्त्री, पुरुष या बच्चे कोई भी कर सकते हैं। नौ गुरुवार साईं फोटो की पूजा करना।
- फूल चढ़ाना, दीपक, अगरबत्ती आदि करना। प्रसाद चढ़ाना एवं साईं बाबा का स्मरण करना, आरती करना आदि की विधि बताई।
- साईं व्रत कथा, साईं स्मरण, साईं चालीसा आदि का पाठ करना।
- नौवें गुरुवार को गरीबों को भोजन देना।
- नौवें गुरुवार को साईं व्रत की किताबें अपने सगे-संबंधी, अड़ोसी पड़ोसी को भेंट में देना।

सूरत से उनकी जेठानी का थोड़े दिनों बाद पत्र आया कि उनके बच्चे साईं व्रत करने लगे हैं और बहुत मन लगाकर पढ़ते हैं। उन्होंने भी व्रत किया था और व्रत की किताबें उनके ऑफिस में दी थीं। इस बारे में उन्होंने लिखा कि उनकी सहेली कोमल बहन की बेटी की शादी साईं व्रत करने से बहुत ही अच्छी-जगह हो गई है। उनके पड़ोसी के गहनों का डब्बा गुम हो गया था, वह साईं व्रत की महिमा के कारण दो महिने के बाद मिल गया। ऐसा अद्‌भुत चमत्कार हुआ था।

किरण बहन ने कहा कि साईं बाबा की महिमा महान है- यह जान लिया था। हे साईं बाबा जैसे आप लोगों पर प्रसन्न होते हैं वैसे हम पर भी होना।

साई व्रत के अद्भुत चमत्कार

घुटने का दर्द गायब

किसी भी रोग में यदि साई बाबा का नाम लिया जाएँ तो निश्चित ही राहत मिलती है और धीरे-धीरे वह रोग दूर हो जाता है।

पानू भाई के घुटने में दर्द होता था। कुछ दिनों पहले फ्रेक्चर हुआ था, जिसके कारण हड्डी के कुछ कण अलग हो गए थे और वह घुटने में चुभते थे। डॉक्टर ने ऑपरेशन करने क लिए कहा था लेकिन पानू भाई ने नहीं करवाया और थोड़े दिनों में ही अच्छे हो गए। और फिर अचानक दर्द फिर से शुरु हुआ। छः दिन तक एक कदम भी चलने के हिम्मत न थी, दर्द भी असहनीय था। छुट्टियों में वे सभी शिरडी जानेवाले थे। वहां से कहीं घूमने जाना था। पर पानू भाई के लिये जाना असंभव था। पैर के दर्द के कारण उन्होंने हंगामा मचा रखा था।

पानू भाई की साईबाबा पर श्रद्धा थी। उपवास भी कर लेते थे। थी। लेकिन कभी विधि पूर्वक पूजा या कथा नहीं की थी। एक संबंधी ने नौ गुरुवार की महिमा बताई। उनकी भी नौ गुरुवार करने के इच्छा हुई। वे हिम्मत पूर्वक स्कूटर पर बैठकर साई बाबा के मंदिर गए और जाकर प्रार्थना की कि मुझे भी शिरडी जाना है। लेकिन मेरी पीड़ा मुझसे सहन नहीं होती। यदि मेरी पीड़ा मंदिर के दरवाजे के बाहर पहुंचते ही दूर हो जाएगी तो मैं 9 गुरुवार का व्रत विधि पूर्वक करके उद्यापन करूंगा।

पानू भाई ने ऐसा चमत्कार जीवन में कभी न देखा था। मंदिर के बाहर आते ही उनका दर्द एकदम गायब हो गया। बाद में वे सब 15 दिन के लिए मसूरी तथ घूमे-फिरे भी। लेकिन साई कृपा से कोई पीड़ा नहीं हुई।

बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण

हेमा स्कूल में पढ़ती थी। उसका पढ़ाई में कभी भी मन नहीं लगता था। नौवीं कक्षा तक जैसे तैसे पास हुई। वह हमेशा कहती कि मुझे कुछ याद नहीं रहता। माता-पिता चिंतित थे कि इस साल दसवीं की पहली, दूसरी परीक्षा में सभी विषयों में फेल हो गई। किसी के कहने से नौ गुरुवार का व्रत शुरु किया। उद्यापन किया तो हेमा की याद शक्ति बढ़ने लगी। जो शिक्षक उसकी बुराई स्मरण करते थे, वे उसकी तारीफ करने लगे। साई बाबा के चमत्कार से बोर्ड की परीक्षा में 75 प्रतिशत अंक आए और फिर उसने 11वीं में साइंस विषय लिया।

गठिया रोग छूमंतर

कांता को कान में दर्द रहने की एवं कम सुनाई देने की तकलीफ शुरु हुई। स्पेशलिस्ट डॉक्टर को दिखाया गया। डॉक्टर ने कहा ऑपरेशन करना बहुत जरूरी है और बायोकसी भी करनी पड़ेगी। ऐसा कह कर गठिया के रोग का नाम बताया। परिवार के सभी लोग घबरा गए। डॉक्टर ने 94 दिन बाद के लिए आपरेशन की तारीख दी। उसी समय में कांता ने जिद की कि 9 गुरुवार पूरे होने पर उद्यापन के बाद ही ऑपरेशन करवाऊंगी। 9 वें गुरुवार को गरीबों को भोजन खिलाया। साई व्रत की पुस्तकें भेंट दीं और अस्पताल गए तो सभी टेस्ट नॉर्मल आए। गठिया गायब हो गई थी। डॉक्टर ने कहा कि कुछ भी नहीं है। सब तरह से ठीक है। साई बाबा के प्रति कांता का प्रेम और विश्वास और भी बढ़ गया।

भयंकर घात से बच गए

मुन्नाभाई की पत्नी को हमेशा कब्ज की शिकायत रहती थी। कभी-कभी वे हरड़े को गरम पानी के साथ ले लेतीं। एक दिन हरड़े खाकर जैसे ही गरम पानी पिया, ग्लास का कांच टूट गया। शायद कांच पेट में ही चला गया है। उन्हें शंका हुई। सबने दूर तक टुकड़े को ढूंढा पर वह न मिला। दो घण्टे बाद पखाने के साथ खून आ गया। खून बंद नहीं हो रहा था। मुन्नाभाई की पत्नी बेहोश जैसी हो गई मुन्नाभाई घबरा गए। रात का एक बजा था। मुन्नाभाई साई बाबा के सामने दीपक जलाकर प्रार्थना करने लगे कि मेरी पत्नी का खून बहना बंद नहीं हो रहा। खून काफी बह चुका है। यदि खून आना बंद हो जाएगा और मेरी पत्नी बच जाएगी तो मैं 9 गुरुवार का व्रत विधिपूर्वक करुंगा। थोड़ी देर में पाखाने के साथ कांच बाहर आ गया, खून बहना बंद हो गया। रात को ही उनकी पत्नी को अस्पताल ले गए। डॉक्टर ने टेस्ट किए। उन्होंने बताया कि अंदर चोट नहीं पहुंची है। वरना जान को खतरा हो सकता था। कमजोरी है, वह धीरे-धीरे दूर हो जाएगी। उसके बाद उनके घर के शुभ प्रसंग में मुन्नाभाई की पत्नी ने खूब डांस किया। मुन्नाभाई ने साई व्रत किया। व्रत की महिमा बढ़ाने के लिए साई व्रत की पुस्तकें भेंट में दीं।

बदली रुक गयी

कमलिन बहन नौकरी करती थीं। उनकी बदली जोधपुर के पोखर गांव में हो गयी। उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके सिर पर आकाश टूट पड़ा हो। उनकी माता की तबियत बिगड़ गई। बहुत भागदौड़ की, लोगों से विनती की, लेकिन बदली किसी भी हालत में न रुकी और यह ऑर्डर हुआ कि यदि दस दिन में कच्छ जिले में हाजिर न हुई तो नौकरी से निकाल दिया जाएगा। अकेले छोटे से अन्जान गांव में जाने से वे घबराती थीं। उस दिन गुरुवार था। कमलिनी बहन की सहेली चंद्रिका सुबह मिलने आई। उसने साई बाबा पर श्रद्धा रखकर गुरुवार का व्रत करने के लिए कहा। उसी दिन से कमलिनी बहन ने 9 गुरुवार का व्रत शुरु किया। तीसरे दिन पत्र मिला कि उनकी बदली जोधपुर में में ही अन्य स्थल पर कर दी गई है। साईबाबा के प्रति उनका विश्वास बढ़ गया और उन्होंने 9 गुरुवार का व्रत पूरा किया। गरीबों को भोजन दिया एवं साई महिमा का प्रचार करने के लिए साई व्रत की पुस्तकें भेंट दीं। इस तरह व्रत का उद्यापन कर दिया गया है।

विवाह हो गया

सुन्दर भाई पढ़े-लिखे एवं सुन्दर थे। वे वकील के यहां नौकरी करते थे। परन्तु काफी आयु होने पर ाी शादी न हो सकी थी। कहीं भी शादी निश्चित नहीं हो रही थी। वह साई बाबा को मानते थे। कभी-कभी मंदिर भी जाते थे। लेकिन कभी विधि पूर्वक व्रत नहीं किया था। उनके मित्र बड़े साई भक्त थे। उन्होंने साई बाबा के व्रत एवं उद्यापन की बात बताई–व्रत करना, गरीबों को भोजन देना एवं साई व्रत की पुस्तकें बांटकर व्रत की महिमा बढ़ाना। सुन्दरभाई ने भी साई व्रत करने का संकल्प किया। फिर व्रत शुरु कर उद्यापन किया तो उनकी शादी सुशील, सुन्दर युवती से हो गई। इस तरह 9 गुरुवार के व्रत का इच्छित फल उन्हें प्राप्त हुआ।

साई कृपा से नौकरी मिली

एक लड़का एम. कॉम. तक पढ़ा था। लेकिन नौकरी नहीं मिलती थी। उसने और उसकी माता ने व्रत करके उद्यापन किया तो उसे नौकरी मिल गई।

इसी तरह एक कलाकार कला के बल पर ही अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। उसे नाटक, टी.वी. में काम नहीं मिल रहा था। 9 गुरुवार का उसने व्रत किया। अचानक उसकी इस क्षेत्र में मांग बढ़ गई। प्रावेशिक पिक्चर, टी.वी. सीरियल में मुख्य भूमिका में काम मिलने लगा। आर्थिक सुख समृद्धि बढ़ गई॥

18 साल बाद बेटी हुई

एक दंपत्ति की शादी को सालों बीत गए थे। परंतु घर में संतान न थी। वे लोग उदास रहते थे। पत्नी राखी को ससुराल में भी बातें सुननी पड़ती थीं। कितने ही ईलाज किए लेकिन कुछ परिणाम न मिला। राखी ने न जाने कितने ही डोरे-धागे किए पर कुछ न हुआ। वह सरकारी नौकरी करती थी। उनके ऑफिस में नरेशभाई भी नौकरी करते थे। उन्होंने ऑफिस में मिठाई बांटी। राखी ने कहा कि कौन सी खुशी में मिठाई बांट रहे हो। उन्होंने कहा कि 10 साल बाद उनके वहां पुत्र जन्म हुआ है और उन्होंने साई महिमा एवं साई व्रत के बारे में चर्चा की और दूसरे दिन उन्होंने 9 गुरुवार के साई व्रत की पुस्तक दी। राखी को साईव्रत एवं उद्यापन करने की सलाह दी तो राखी ने भी श्रद्धापूर्वक व्रत करके उद्यापन किया। शादी के 18 साल बाद राखी ने एक पुत्री को जन्म दिया। साई बाबा उन पर भी प्रसन्न हुए।

साई स्मरण

आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई।
भक्त तुम्हें बुलाते साई।
आश हमारी टूटे ना।
विश्वास हमारा डोले ना।
आओ साई आओ साई।
शिरडीवाले मेरे साई
भक्तों के प्यारे साई।
करुणा के सागर साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥
दुःख मिटाने आओ साई।
सुख देने आओ साई।
बालक तेरे बुलाते साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥
कीर्तन साई पूजन साई।
रिद्धि साई सिद्धि साई।
आनंद साई वैभव साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥
तृप्ति साई मुक्ति साई।
पृथ्वी साई अंबर साई।
शांति साई ॐ शाई।

आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥
पूरब साई पश्चिम साई।
उत्तर साई दक्षिण साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥
हिन्दु साई मुस्लिम साई।
जीवन साई यात्रा साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥
धर्म साई कर्म साई।
ध्यान साई दान साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥
सत्यम् साई शिवम् साई।
सुन्दरम् साई भोला साई।
दयालु साई ईश्वर साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥
शक्ति साई भक्ति साई।
जीवन साई मुक्ति साई।
दर्पन साई अर्पन साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥

श्री साई बावनी

जय ईश्वर जय साई दयाल। तू ही जगत का पालनहार ॥१॥
दत्त दिगम्बर प्रभु अवतार। तेरे बस में सब संसार ॥२॥
ब्रह्माच्युत शंकर अवतार। शरणागत का प्राणाधार ॥३॥
दर्शन दे दो प्रभु मेरे। मिटा दो चौरासी फेरे ॥४॥
कफनी तेरी इक साया। झोली कांधे लटकाया ॥५॥
नीम तले तुम प्रकट हुए। फकीर बन के तुम आए ॥६॥
कलयुग में अवतार लिया। पतित पावन तुमने किया ॥७॥
शिरडी गांव में वास किया। लोगों का मन लुभा लिया ॥८॥
चिलम थी शोभा हाथों की। बंसी जैसी मोहन की ॥९॥
दया भरी थी आंखों में। अमृतधारा बातों में ॥१०॥
धन्य द्वारका वो माई। समा गये जहां साई ॥११॥
जल जाता है पाप वहां। बाबा की है धूनी जहां ॥१२॥
भूला भटका मैं अंजान। दे मुझको अपना वरदान ॥१३॥
करुणा सिन्धु प्रभु मेरे। लाखों बैठे दर पे तेरे ॥१४॥
अग्निहोत्री शास्त्री को। चमत्कार तुमने दिखलाया ॥१५॥
जीवनदान शामा पाया। जहर सांप का उतराया ॥१६॥
प्रलयकाल को रोक लिया। भक्तों को भयमुक्त किया ॥१७॥
महामारी को बेनाम किया। शिरडीपुरी को बचा लिया ॥१८॥
प्रणाम तुमको मेरे ईश। चरणों में तेरे मेरा शीश ॥१९॥
मन की आस पूरी करो। भवसागर से पार करो ॥२०॥
भक्त भीमाजी था बीमार। कर बैठा था सौ उपचार ॥२१॥
धन्य साई की पवित्र उदी। मिटा गई उसकी क्षय व्याधी ॥२२॥
दिखलाया तूने विठ्ठल रुप। काकाजी को स्वयं स्वरुप ॥२३॥
दामू को सन्तान दिया। मन उसका संतुष्ट किया ॥२४॥
कृपानिधि अब कृपा करो। दीन दयालु दया करो ॥२५॥
तन मन धन अर्पण तुमको। दे दो सद्गति प्रभु मुझको ॥२६॥
मेधा तुमको न जाना था। मुस्लिम तुमको माना था ॥२७॥
स्वयं तुम बन के शिव शंकर। बना दिया उसका किंकर ॥२८॥
रोशनाई की चिरागों से। तेल के बदले पानी से ॥२९॥
जिसने देखा आंखों हाल। हाल हुआ उसका बेहाल ॥३०॥
चांद भाई था उलझन में। घोड़े के कारण मन में ॥३१॥
साई ने की ऐसी कृपा। घोड़ा फिर से वह पा सका ॥३२॥
श्रद्धा सबुरी मन में रखो। साई साई नाम रटो ॥३३॥
पूरी होगी मन की आस। कर लो साई का नित ध्यान ॥३४॥
जान के खतरा तात्या का। दान दी अपनी आयु का ॥३५॥
ऋण बायजा का चुका दिया। तुमने साई कमाल किया ॥३६॥
पशुपक्षी पर तेरी लगन। प्यार में तुम थे उनके मगन ॥३७॥
सब पर तेरी रहम नजर। लेते सबकी खुद ही खबर ॥३८॥
शरण में तेरी जो आया। तुमने उसको अपनाया ॥३९॥
दिये हैं तुमने ग्यारह वचन। भक्तों के प्रति लेकर आना ॥४०॥
कण-कण में तुमने है भगवान। तेरी लीला शक्ति महान् ॥४१॥
कैसे करुं तेरे गुणगान। बुद्धिहीन मैं हूं नादान ॥४२॥
दीन दयालू तुम हो दाता। हम सबके तुम त्राता ॥४३॥
कृपा करो अब साई मेरे। चरणों में ले अब तुम्हरे ॥४४॥
सुबह शाम साई का ध्यान। साई लीला के गुणगान ॥४५॥
दृढ़ भक्ति से जो गायेगा। परम पद को वह पायेगा ॥४६॥
हर दिन सुबह शाम को। गाये साई बावनी को ॥४७॥
साई देंगे उसका साथ। लेकर हाथ में हाथ ॥४८॥
अनुभव तृप्ति के वह बोल। शब्द बड़े हैं यह अनमोल ॥४९॥
यकीन जिसने मान लिया। जीवन उसने सफल किया ॥५०॥
साई शक्ति विराट स्वरूप। मन मोहक साई का रुप ॥५१॥
गौर से देखो तुम भाई। बोलो जय सदगुरु साई ॥५२॥

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगीराज परब्रह्म श्री सच्चिदानन्द सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु शुभं भवतु

साईबाबा का भोग

भोग लगाओ साईबाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
प्रीति के पकवान बनाए और भाव भरे भोजन मैंने अपने हाथ से
कहो तो मंगाऊं ताजा मेवा बरफी पेड़ा पकवान रे मेरा प्रेम भरा थाल
गंगा जमुना के नीर लाऊं प्रेम से पान कराऊँ
भोग लगाओ साईबाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
सबरी सुदामा और विदुर की भाजी
ऐसी तृप्ति कर ले मेरे साईबाबा भोग लगाओ
साईबाबा मेरा प्रेम भरा थाल। लौंग सुपारी भरे पान के बीडे
मुखवास करो मेरे साईबाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
भक्तों के साई प्यारे तेरी हो जय-जयकार मेरा प्रेम भरा थाल

साईबाबा की आरती

आरती श्री साई गुरुवर की, परमानन्द सदा सुखवर की।
जाकी कृपा विपुल सुखकारी। दुःख, शोक, संकट, भयहारी ॥१॥
शिरडी में अवतार रचाया। चमत्कार से तत्व दिखाया ॥२॥
कितने भक्त चरण पर आये। वे सुख-शान्ति चिन्तन पाये ॥३॥
भाव धरे जो मन में जैसा। पावन अनुभव वो ही वैसा ॥४॥
गुरु की उदी लगावे तन को। समाधान लाभत उस मन को ॥५॥
साई नाम सदा जो गावे। सो फल जग में शाश्वत पावे ॥६॥
गुरुवार करि पूजा सेवा। उस पर कृपा करत गुरुदेवा ॥७॥
राम, कृष्ण, हनुमान, रुप में दे दर्शन जानत जो मन में ॥८॥
विधि धर्म के सेवक आते। दर्शन कर इच्छित फल पाते ॥९॥
जै बोलो साई बाबा की। जै बोलो अवधूत गुरु की ॥१०॥
'साई दास' आरती को गावे। घर में बसे सुख मंगल पावे ॥११॥

नाम स्मरण

हरे राम हरे राम राम-राम हरे हरे
हरे कृष्णा हरे कृष्णा कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे साई हरे साई साई साई हरे हरे
हरे बाबा हरे बाबा बाबा बाबा हरे हरे
हरे दत्त हरे दत्त दत्त दत्त हरे हरे

साई वंदना-१

रहम नजर करो अब मोरे साई।
तुम बिन नहीं मुझे मां-बाप-भाई।
मैं अन्धा हूं बन्दा तुम्हारा।
मैं न जानूं, अल्ला इलाही।
खाली जमाना मैंने गंवाया।
साथी आखर का किया न कोई इलाही।
अपने मस्जिद का झाड़ू भक्त है।
मालिक हमारे तुम बाबा साई।

साई वंदना-२

साई रहम नजर करना बच्चों का पालन करना।
जाना तुमने जगत् पसारा, सब ही झूठ जमाना।
मैं अन्धा हूं बन्दा आपका, मुझ को प्रभु दिखलाना।
भक्त कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना।

साई राम... साई राम... साई राम...
साई श्याम... साई श्याम... साई श्याम...

If we see all actions as God's doing, we will be unattached and free from karmic bondage.